[2022] 4 एस.सी.आर 1023

अनुज सिंह उर्फ रामनुज सिंह उर्फ सेठ सिंह

बनाम्

बिहार राज्य

(आपराधिक अपील सं. 150/2020)

22 अप्रैल, 2022

[एन. वी. रमना, मुख्य न्यायधीश, कृष्णा मुरारी और हिमा कोहली, न्यायमुर्तिगण]

दंड संहिता, 1860:धाराएँ324, 307 सहपठित धारा34-स्वैच्छिक रूप से खतरनाक हथियारों या साधनों से चोट पहुँचाना-भूमि विवाद पर अपीलार्थी और सूचक के बीच लडाई बंदूकों से लैस अपीलकर्ताओं ने मुखबिर पर गोलियां चलाईं जो उसके बाएं पैर और दाहिने हाथ में लग गई-अन्य दो अभियुक्तों ने सूचक पर भाला और लाठियो के साथ हमला किया। निचली अदालत ने अपीलार्थियों को धारा 307 सहपठित धारा 34 और शस्त्र अधिनियम की धारा 27 के तहत दोषी ठहराया और तदनुसार सजा दी। उच्च न्यायालय ने धारा 307/34 से धारा 324 तक के तहत दोषसिद्धि को संशोधित किया।.और दोषसिद्धी और शस्त्र अधिनियम की धारा 27 के अंतर्गत सजा की पुष्टि करते हुए जुर्माने के साथ दो साल के कठोर कारावास की सजा सुनाई। अपील पर अभिनिर्धारित किया गया:अपीलार्थी में से एक के अन्यत्र द्वारा उपस्थिति की दलील का बचाव विश्वास को प्रेरित नहीं करता है-गवाहों की गवाही कि अपीलार्थी बंदूकों से लैस घटना स्थल पर मौजूद थे और उन्होंने सूचक को चोट पहुंचाई थी, को मामूली विरोधाभासों के कारण-खारिज नहीं किया जा सकता है। चिकित्सक के चिकित्सा साक्ष्य इस बात की पुष्टि करते हैं कि सूचक पर चोटें आग्नेयास्त्र के कारण हुई थीं। अभियोजन पक्ष के गवाहों का साक्ष्य है कि दो अपीलकर्ताओं ने एक विवाद के कारण आग्नेयास्त्र का उपयोग करके सूचक के शरीर पर चोट पहुंचाई - धारा 324 का आरोप। स्वैच्छिक रूप से आग्नेयास्त्र-खतरनाक हथियार से चोट पहुँचाना, जो अपीलार्थियों के खिलाफ स्थापित किया गया है, और इस तरह वे शस्त्र अधिनियम की धारा 27 द्वारा निर्धारित हथियारों का उपयोग करने के लिए सजा से बच नहीं सकते हैं। इस

प्रकार, उच्च न्यायालय ने अपीलार्थियों को धारा 324 और शस्त्र अधिनियम की धारा 27 के तहत दंडनीय अपराधों के लिए उचित रूप से दोषी ठहराया।324 आपराधिक मुकदमा।

याचिकाओं को खारिज करते हुए अदालत ने अभिनिर्धारित किया।

1.1 गवाहों के बयान के हल्के अवलोकन से साबित होता है कि दोनों अपीलार्थी घटनास्थल पर एक बन्दूक के साथ मौजुद थे और मुखबिर को अपीलार्थियों के कृत्य के कारण चोट लगी थी। अपीलार्थियों के कार्य के कारण।अपीलार्थी एम द्वारा ली गई अन्यत्र उपस्थिति की दलील का बचाव कि उसे इस्लामपुर प्रखण्ड में तैनात किया गया था, विश्वास को प्रेरित नहीं करता है क्योंकि कार्यालय द्वारा कोई उपस्थिति पंजी नहीं रखा गया है और अभियोजन पक्ष के गवाह ने स्पष्ट रूप से कहा है कि अपीलार्थी एम घटना स्थल पर मौजूद था। [पारा 16] [1033-डी-ई]

1.2 यह विवादित नहीं है कि घटना के समय या हाथ या पैर पर लगी चोटों के संबंध में मामूली विरोधाभास हैं, लेकिन गवाहों का निरंतर कथन यह है कि अपीलकर्ता बंदूकों से लैस घटना स्थल पर मौजूद थे और उन्होंने सूचक को चोट पहुंचाई थी। हालाँकि, आपराधिक मुकदमे में एक गवाह की गवाही को केवल मामूली विरोधाभासों या चूक के कारण खारिज नहीं किया जा सकता है। [पारा 17] [1033-ई-जी]

1.3 अभियोजन पक्ष के मामले की पुष्टि करने के लिए एक चिकित्सा गवाह का साक्ष्यात्मक मूल्य बहुत महत्वपूर्ण है और यह केवल चश्मदीद गवाहों की गवाही पर एक जाँच नहीं है, यह स्वतंत्रता गवाही भी है, क्योंकि यह अन्य मौखिक साक्ष्यों के अलावा कुछ तथ्यों को स्थापित कर सकता है।अभियोजन पक्ष द्वारा प्रस्तुत किए गए चिकित्सीय साक्ष्य का बहुत पुष्टिकारक मूल्य है क्योंकि यह साबित करता है कि चोटें कथित तरीके से लगी हो सकती हैं। पीडब्लू-8, सूचक की जांच करने वाले डॉक्टर ने स्पष्ट रूप से कहा है कि सूचक को लगी सभी चोटें आग्नेयास्त्रों के कारण हुई थीं और यदि कोई व्यक्ति 6-7 फुट से गोली चलाता है तो घाव (घायल क्षेत्र) पर टैटू बनाना दिखाई नहीं दे सकता है। [पारा 18] [1034-डी एफ]

1.4 अभियोजन पक्ष के गवाहों की एक विस्तृत जांच से स्पष्ट रूप से यह स्थापित होता है कि मुखबिर को उसकी दीवार की मरम्मत करने से रोकने के संबंध में सूचक और दो अपीलकर्ताओं के बीच विवाद हुआ था कि सभी गवाहों ने घटना स्थल पर दो अपीलकर्ताओं की

उपस्थिति की स्पष्ट रूप से पुष्टि की है; कि सभी चश्मदीद गवाहों ने पुष्टि की है कि दोनों अपीलकर्ता आग्नेयास्त्र से लैस थे; कि पीडब्लू-8, की चिकित्सीय साक्ष्य की पुष्टि डॉक्टर के चिकित्सा साक्ष्य से होती है कि सूचक को लगी चोटें आग्नेयास्त्र की चोटें थीं; और यह कि चोटें सूचक के शरीर के गैर-महत्वपूर्ण हिस्से पर लगी थीं।[पारा 19] [1034-एफ-एच]

1.5 "चोट" शब्द का सरल अर्थ है एक ऐसा कार्य करना जिससे किसी व्यक्ति को शारीरिक दर्द, चोट या कोई बीमारी हो।कभी-कभी, चोट स्वेच्छा से पहुचाई जा सकती है या है। खतरनाक हथियार या साधनो के उपयोग के कारण हो सकती है ।एक व्यक्ति खतरनाक हथियारों और साधनों के माध्यम से स्वेच्छा से चोट पहुँचाने के लिए भारतीय दण्ड संहिता 324 के तहत उत्तरदायी होगा। जब कोई व्यक्ति भा.दं.सं. की धारा 324 के तहत खतरनाक हथियारों और साधनों से स्वेच्छा से चोट पहुँचाने का अपराध करता है, तो ऐसे व्यक्ति को तीन साल की अवधि के लिए कारावास या जुर्माने से दंडित किया जाएगा। [पारा 20-21] [1035-बी.सी 1036-बी]

1.6 अभियोजन पक्ष के गवाहों के साक्ष्य से यह स्पष्ट है कि दोनों अपीलार्थियों ने सूचक के शरीर पर अग्नेयास्त्र का उपयोग करके अपीलार्थी और सूचक के बीच हुए विवाद के कारण सूचक को चोट पहुंचाई है ।अभियोजन पक्ष के गवाह के साक्ष्य से भी इसकी पुष्टि होती है कि भूमि विवाद के कारण पक्षों के बीच पूर्व शत्रुता थी और उनके कृत्यों से भी यही माना जा सकता है।इस प्रकार, दोनों अपीलार्थियों के खिलाफ भारतीय दंड संहिता की धारा 324 का आरोप स्थापित है।एक बार जब अपीलार्थियों के खिलाफ भारतीय दंड संहिता की धारा 324 के तहत स्वेच्छा से आग्नेयास्त्र से चोट पहुँचाने का आरोप स्थापित हो जाता है, जो एक खतरनाक हथियार है, तो वे शस्त्र अधिनियम की धारा 27 द्वारा निर्धारित हथियारों का उपयोग करने के लिए सजा से बच नहीं सकते हैं। [पारा 22] [1036-बी-ई] सी

1.7 उच्च न्यायालय ने अपीलार्थियों को भारतीय दंड संहिता की धारा 324 और शस्त्र अधिनियम की धारा 27 के तहत दंडनीय अपराधों के लिए सही ठहराया है। आक्षेपित निर्णय में हस्तक्षेप करने का कोई आधार नहीं है। [पारा 23] [1036-ई]

नारायण चेतनराम चौधरी और अन्य बनाम महाराष्ट्र राज्य (2000) 8 एससीसी 457:[2000] 3 पूरक एससीआर 104-संदर्भित किया गया है।

निर्णय विधि संदर्भ

[2000] 3 पूरक एससीआर 104 संदर्भित किया गया है पारा 17

आपराधिक अपीलय क्षेत्राधिकार: आपराधिक अपील संख्या 150/2020

पटना में उच्च क्षेत्राधिकार के न्यायिक निर्णय और आदेश दिनांक 16.01.18 से आपराधिक एकल पीठ संख्या 69/2007 में

साथ में,

आपराधिक अपील No.151/2020

श्रीमती अंजना प्रकाश, वरिष्ठ अधिवक्ता, अनुज प्रकाश, सुश्री जयक्रिती एस. जडेजा, प्रभात रंजन राज, शांतनु सागर, अपीलार्थी के लिए अधिवक्तागण

अभिनव मुखर्जी, साकेत सिंह, सुश्री संगीता सिंह, श्रीमती निरंजना सिंह, उत्तरदाता के लिए अधिवक्तागण

गौरव अग्रवाल, मध्यस्थ के लिए अधिवक्ता

न्यायालय का निर्णय न्यायमुर्ति कृष्ण मुरारी के द्वारा पारित किया गया।

निर्णय

1. इन दो संबंधित अपीलों में अपीलार्थियों ने पटना उच्च न्यायालय द्वारा पारित दिनांक 16.01.2018 के आम फैसले और आदेश को आपराधिक अपील (एसजे) संख्या 69 में चुनौती दी है (जिसे इसमें इसके बाद 'उच्च न्यायालय' के रूप में संदर्भित किया गया है), जो वर्तमान अपीलार्थियों द्वारा दायर की गई है, जिसमें धारा 307 के तहत अपीलार्थियों को दोषी ठहराते हुए ट्रायल कोर्ट द्वारा पारित फैसले को संशोधित किया गया है। भारतीय दंड संहिता की धारा 34 (संक्षेप में 'भारतीय दंड संहिता') और शस्त्र अधिनियम की धारा 27 के अधीन उनकी दोषसिद्धि की पुष्टि करता है।उनके द्वारा दायर एक अपील पर, उच्च न्यायालय ने भारतीय दंड संहिता की धारा 307 के साथ पठित धारा 34 के तहत उनकी दोषसिद्धि को भारतीय दंड

संहिता की धारा 324 में परिवर्तित कर दिया और 5,000/- रुपए के जुर्माने और चूक के मामले में तीन महीने के साधारण कारावास के साथ दो साल के कठोर कारावास का आदेश दिया। अपीलार्थी को निचली अदालत द्वारा शस्त्र अधिनियम की धारा २७ के तहत तीन साल के कठोर कारावास के दंड की पुष्टि की गई.उसी से व्यथित, दो अपीलार्थी हमारे सामने हैं.

2. अभियोजन का मामला संक्षेप में निम्नानुसार हैः-

अभियोजन गवाह-6 (घायल सूचक) के फर्दबयान के आधार पर, पुलिस ने डॉ. हिमकर के क्लिनिक में दिनांक 10.10.1999 के केस नंबर 312, पुलिस स्टेशन-लखीसराय के खिलाफ आईपीसी की धारा 323,307 के साथ पठित धारा 34 और शस्त्र अधिनियम की धारा 27 के तहत एफआईआर दर्ज की।5.30 बजे, जब वह बारिश के कारण गिर गई 'कच्चे मिट्टी की दीवार' की मरम्मत कर रहे थे, तो उनके पड़ोसी, अर्थात्, आरोपी अपीलकर्ता, मनोज सिंह आए और दीवार की मरम्मत का विरोध किया।सूचक ने उसे बताया कि यह जमीन उसकी है, जिसके बाद मनोज सिंह अपने घर गया और सह-आरोपी अनुज सिंह के साथ अपने हाथों में बंदूक लिए हुए वापस आया। अन्य दो आरोपी प्रवीण सिंह और अरविंद सिंह भी अपने हाथों में भाला लिए हुए आए थे। यह भी कहा गया कि मनोज सिंह और अनुज सिंह दोनों ने उन्हें मारने के इरादे से गोलियां चलाईं।मनोज सिंह की बंदूक से गोली दाहिने पैर में लगी और अनुज सिंह की बंदूक से गोली हाथ में लगी।यह भी कहा गया कि प्रवीण सिंह और अरविंद सिंह ने अपने हाथों में भाला और लाठी से उस पर हमला किया।गोली चलने की आवाज सुनकर उसके परिजन और अन्य ग्रामीण वहां पहुंचे।लोगों को आते देखकर चारों आरोपी अपने घरों को भाग गए। यह भी कहा गया कि उन्हें घायल अवस्था में डॉ. हिमकर के क्लिनिक में लाया गया, जहां पुलिस के पहुंचने पर बयान दर्ज किया गया।

3. घायल सूचक अभियोजन गवाह-6 द्वारा दिए गए पूर्वोक्त बयान के आधार पर, एफआईआर उसी दिन दर्ज की गई थी, हालांकि, इसे उसी दिन मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट के न्यायालय को अग्रसारित नहीं किया गया था, बल्कि दो दिनों के बाद, अर्थात् 12.10.1999 को भेजा गया था। जांच पूरी करने के बाद, पुलिस ने दो अपीलकर्ताओं, अनुज सिंह और मनोज सिंह के खिलाफ भारतीय दंड संहिता की धारा 307 और शस्त्र अधिनियम की धारा 27 के तहत आरोप पत्र प्रस्तुत किया। अपर मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट ने दिनांक 01.09.2000 को

अभियुक्तों व्यक्तियों के विरुद्ध संज्ञान लिया और मामला दिनांक 16.01.2001 को सेशन न्यायालय को सौंप दिया गया।

4. निचली अदालत ने अभियोजन पक्ष के गवाह द्वारा दिए गए बयान और बचाव पक्ष के साक्ष्य का विश्लेषण करने के बाद, दिनांक 22.12.2006 के निर्णय और आदेश द्वारा अभियुक्त अपीलकर्ता अनुज सिंह और मनोज सिंह और दो अन्य सह-अभियुक्त, प्रवीण सिंह और अरविंद सिंह को भारतीय दंड संहिता की धारा 34 के साथ पठित धारा 307 के तहत दोषी ठहराया। इसमें दोनों अपीलार्थियों को आगे शस्त्र अधिनियम की धारा २७ के तहत तीन साल के कठोर कारावास की सजा सुनाई गई और जुर्माना अदा करने में विफल रहने पर प्रत्येक पर रु. 2000/- का जुर्माना और तीन महीने के लिए डिफॉल्ट क्लॉज लगाया गया.

5. उच्च न्यायालय के समक्ष आपराधिक अपील के दो सेट दायर किए गए थे। दो अभियुक्तों, प्रवीण सिंह और अरविंद सिंह ने 2007 की आपराधिक अपील (एसजे) संख्या 16 दायर की, जबकि वर्तमान अपीलकर्ताओं ने अपनी दोषसिद्धि और सजा को चुनौती देते हुए 2007 की आपराधिक अपील (एसजे) संख्या 69 दायर की।

6. उच्च न्यायालय ने दोनों अपीलों का निर्णय दिनांक 16.01.2018 के समान निर्णय और आदेश द्वारा किया।जहां तक प्रवीण सिंह और अरविंद सिंह द्वारा दायर 2007 की आपराधिक अपील (एसजे) संख्या 16 का संबंध है, उसे उच्च न्यायालय द्वारा अनुमति दी गई थी और उनकी दोषसिद्धि और दंड को रद्द कर दिया गया था और उन्हें दोषमुक्त कर दिया गया था।

7. जहां तक दो अपीलकर्ताओं द्वारा दायर 2007 की आपराधिक अपील (एसजे) संख्या 69 का संबंध है, उच्च न्यायालय ने आईपीसी की धारा 34 के साथ पठित धारा 307 के तहत दोषसिद्धि को भारतीय दंड संहिता की धारा 324 में संशोधित किया और ट्रायल (परीक्षण) न्यायालय द्वारा कथित धारा के तहत दिए गए दंड को दो साल के लिए 5,000/- रुपये के जुर्माने के साथ तीन महीने के साधारण कारावास में संशोधित किया.हालांकि, दोनों अपीलकर्ताओं की दोषसिद्धि और शस्त्र अधिनियम की धारा २७ के तहत उनकी सजा की पुष्टि की गई थी।

8. हमने श्रीमती अंजना प्रकाश, अपीलार्थियों की ओर से उपस्थित वरिष्ठ अधिवक्ता और श्री अभिनव मुखर्जी, श्री साकेत सिंह, प्रत्यर्थी राज्य की ओर से उपस्थित विद्वान अधिवक्ता और श्री गौरव अग्रवाल, हस्तक्षेपकर्ता की ओर से उपस्थित विद्वान अधिवक्ता को सुना है।

9. अपीलार्थियों की ओर से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता श्रीमती अंजना प्रकाश ने जोरदार रूप से प्रस्तुत किया कि यद्यपि दोषसिद्धि शस्त्र अधिनियम की धारा २७ के तहत है, लेकिन किसी की भी बरामदगी का संकेत देने के लिए अभिलेख पर कोई सामग्री उपलब्ध नहीं है। बंदूक या कोई भी जब्ती ज्ञापन जिसमें घटनास्थल से किसी भी गोली या पेलेट की बरामदगी दिखाई गई हो।उन्होंने यह भी बताया कि भले ही फरदबियान 10.10.1999 को दर्ज किया गया था और उसी दिन प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज की गई थी, लेकिन इसे 12.10.1999 को मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट की अदालत को भेजा गया था और प्राथमिकी प्रस्तुत करने में देरी के लिए किसी भी स्पष्टीकरण के अभाव में, पूरी अभियोजन कहानी संदिग्ध हो जाती है।

10. अभियोजन पक्ष के गवाहों के बयान पर गौर करने के बाद उन्होंने उसमें मौजूद विरोधाभासों की ओर इशारा किया और जोरदार ढंग से कहा कि अभियोजन पक्ष के गवाहों द्वारा दिए गए विरोधाभासी बयान अभियोजन पक्ष की कहानी की सत्यता पर संदेह की एक गंभीर छाया डालते हैं और इस प्रकार, अपीलकर्ताओं को गलत तरीके से दोषी ठहराया गया है और उन्हें बरी किया जा सकता है।

11. प्रत्यर्थी और मध्यस्थ की ओर से उपस्थित विद्वत वकील ने प्रस्तुत किया कि उच्च न्यायालय ने गवाहों के बयान का विश्लेषण करने के बाद अपीलार्थियों को उचित रूप से दोषी ठहराया है और आक्षेपित आदेश में कोई अवैधता नहीं होने के कारण, इसमें किसी भी हस्तक्षेप की आवश्यकता नहीं है।

12. हमने पक्षकारों की ओर से उपस्थित विद्वत वकील द्वारा दिए गए तर्कों पर विचार किया है और अभिलेख का अवलोकन किया है।

13. हमारे विचार के लिए इस अपील में उठने वाला मुख्य मुद्दा यह है कि क्या भारतीय दंड संहिता की धारा 324 और शस्त्र अधिनियम की धारा 27 के तहत दो अपीलकर्ताओं अनुज सिंह और मनोज सिंह की दोषसिद्धि धारणीय है?

14. अभियोजन पक्ष ने बचाव पक्ष की ओर से नौ गवाहों और दो गवाहों से जिरह की। अभियोजन पक्ष के गवाह की गवाही का विश्लेषण इस प्रकार हैः

(क) अभियोजना गवाह-1 और अभियोजना गवाह-2, विद्या सागर और अनिल सिंह को अभियोजन द्वारा पक्षद्रोही घोषित किया गया था।

(ख) अभियोजना गवाह-3 जनार्दन सिंह ने कहा कि 10.10.1999 को 5.30 बजे,एक घटना हुई और उस समय वह अपने खेत से बजरंगबली मंदिर आए और उन्होंने कुमार नंदन सिंह को देखा जो अपनी दीवार की मरम्मत कर रहे थे।इस बीच सभी आरोपी आए और कुमार नंदन सिंह को गाली देना शुरू कर दिया।इसके बाद आरोपी अपने घर गए और अनुज सिंह और मनोज सिंह बंदूक के साथ वापस आए, जबकि प्रवीण सिंह और अरविंद सिंह लाठी और भाला लेकर आए।कुमार नंदन सिंह ने शोर मचाया और अपने आस-पास के सभी लोगों को घटना स्थल से भागने के लिए कहा और इस बीच, आरोपी मनोज सिंह ने कुमार नंदन सिंह पर गोली चला दी, जो उसके बाएं पैर में लगी।दूसरी गोली आरोपी अनुज सिंह ने चलाई जिससे कुमार नंदन सिंह नीचे गिर गया।इसके बाद सभी आरोपी भाग गए। अपनी प्रतिपरीक्षा में, प्रति परीक्षणम में, अभियोजन गवाह-३ ने कहा कि आरोपी मनोज सिंह घटना के समय मौजूद था.उन्होंने यह भी कहा कि बंदूक की गोली से घायल होने के कारण कुमार नंदन सिंह के शरीर से खून बह रहा था, जिसके परिणामस्वरूप उसके कपड़े खून से सने हुए थे।उन्होंने आगे कहा कि लखीसराय रेफरल अस्पताल उनके घर और डॉ. हिमकर के क्लिनिक के बीच में है, हालांकि, रेफरल अस्पताल में डॉक्टर उपलब्ध नहीं थे।इसलिए कुमार नंदन सिंह को उपचार के लिए डॉ. हिमकर के निजी क्लिनिक में ले जाया गया।

(ग) अभियोजन गवाह-4 नवीन सिंह ने कहा है कि घटना 10.10.1999 को 5 बजे हुई। उस समय वह बजरंगबली मंदिर के पास खड़े थे और कुमार नंदन सिंह अपनी दीवार की मरम्मत कर रहे थे।इस बीच, आरोपी मनोज सिंह आया और चाहता था कि वह दीवार की मरम्मत बंद करे।इस पर दोनों के बीच बहस हो गई और उसके बाद आरोपी अपने घर लौट गए।आरोपी मनोज सिंह और अनुज सिंह अपने घर से वापस आए और कुमार नंदन सिंह पर गोली चला दी, जो उनके पैर और हाथ में लगी। शोर मचाने पर आरोपी फरार हो गए। अपनी जिरह में, अभियोजन गवाह संख्या-4 ने स्वीकार किया कि गोली लगने की चोट के

कारण उसके पैर और हाथ से खून बह रहा था। उन्होंने यह भी कहा कि आरोपी मनोज सिंह सरकारी सेवा में है लेकिन वह घटना स्थल पर मौजूद था।

(घ) अभियोजन गवाह संख्या-5 गौरी शंकर सिंह फर्दबयान के हस्ताक्षरकर्ताओं में से एक हैं, लेकिन उन्होंने फर्दबयान पर अपने हस्ताक्षर साबित नहीं किए हैं।उन्होंने कहा है कि यह घटना 10 अक्टूबर, 1999 को 5 बजे घटित हुईःउस समय, कुमार नंदन सिंह अपनी दीवार की मरम्मत कर रहा था और आरोपी मनोज सिंह आया और मरम्मत का काम रोकना चाहता था।दोनों के बीच बहस हो गई और उसके बाद आरोपी मनोज सिंह अपने घर की ओर भागा और हाथ में बंदूक लेकर वापस आ गया।अनुज सिंह के हाथ में बंदूक थी, जबकि प्रवीण सिंह और अरविंद सिंह के हाथ में क्रमशः भाला और लाठी थी।आरोपी मनोज सिंह ने कुमार नंदन सिंह पर गोली चला दी, जिससे वह अपने पैर में घायल हो गया और अनुज सिंह ने कुमार नंदन सिंह पर गोली चला दी, जो कुमार नंदन सिंह की बांह में लगी।अपनी जिरह में, अभियोजन गवाह-5 ने स्वीकार किया कि अभियुक्त व्यक्तियों और कुमार नंदन सिंह के बीच एक विवाद चल रहा है।उन्होंने यह भी कहा कि गोली लगने के कारण उनके हाथ और पैर से खून बह रहा था।उन्होंने आगे कहा कि मनोज सिंह और अनुज सिंह ने 6-7 हाथों की दूरी से गोली चलाई और दोनों गोलियां एक ही दूरी से चलाई गईं।

(ङ) घायल कुमारर नंदन सिंह, अभियोजन संख्या-6, घायल और मामले के सूचक ने कहा है कि घटना 10.10.1999 को शाम 5.30 बजे हुई और उस समय, वह अपनी दीवार की मरम्मत कर रहा था।आरोपी मनोज सिंह एक मोटरसाइकिल पर आया और उससे पूछा कि वह सड़क पर दीवार की मरम्मत क्यों कर रहा है, जिसके लिए उसने जवाब दिया कि वह अपनी जमीन पर दीवार खड़ी कर रहा है। इसके बाद, दोनों के बीच विवाद हुआ। आरोपी मनोज सिंह और अनुज सिंह बंदूक लेकर आए थे और अरविंद सिंह और प्रवीण सिंह लाठियां लेकर आए थे। इसके बाद, आरोपी मनोज सिंह और अनुज सिंह ने उस पर गोली चलाई, जो उसके बाएं पैर और दाएं हाथ पर लगी, जिससे वह नीचे गिर गया और बेहोश हो गया। उन्हें तुरंत डॉ. हिमकर के निजी क्लिनिक में ले जाया गया, जहां उनका इलाज किया गया। अपनी प्रतिपरीक्षण में, अभियोजन गवाह-6 ने स्वीकार किया कि उसके और अभियुक्त व्यक्ति के बीच बँटवारा 30 साल पहले हुआ था और उसने आगे कहा कि

वह यह नहीं कह सकता कि उसके शरीर से कोई खून बह रहा था क्योंकि वह बेहोश था। उसने यह भी कहा कि उसकी धोती और कुर्ते पर खून के धब्बे थे और उसे सब-इंस्पेक्टर को दिखाने पर उसने उसे नहीं लिया।

(च) अभियोजन गवाह-7 जगदीश सिंह ने कहा कि घटना के समय, उन्होंने देखा कि कुमार नंदन सिंह सड़क पर फैलाकर चारदीवारी का निर्माण कर रहा था। इस पर प्रवीण सिंह, अनुज सिंह और अरविंद सिंह वहां पहुंचे और कुमार नंदन सिंह को पीटना शुरू कर दिया। शोर मचाने पर विनोद सिंह एक पिस्तौल के साथ आया और कुमार नंदन सिंह पर गोली चला दी, जिससे उसके पैर और हाथ में चोट लग गई। अपनी जिरह में, अभियोजन गवाह-७ ने कहा कि अभियुक्त मनोज सिंह घटना के समय उपस्थित नहीं था।

(छ) कहा जाता है कि अभियोजन गवाह संख्या-8 डॉ. हिमकर ने घायल सूचक कुमार नंदन सिंह की जांच की थी। उन्होंने कहा कि 10.10.1999 को जब वह अतिरिक्त प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र परसामा के रूप में तैनात थे, उन्होंने कुमार नंदन सिंह की जांच की और उन्हें निम्नलिखित चोटें मिलीं:

> "I. (क) दाहिनी बांह के पृष्ठभाग पर उल्टे मार्जिन के साथ लगभग 1/6 व्यास के घाव – लगभग 2" कलाई के निकट त्वचा पर चकत्ते थे।
>
> (ख) बाहर निकला घाव-लगभग ¼" व्यास का कटा घाव के समान स्तर पर दाहिनी बांह के कलाई के पीछे भाग पर उल्टा हआ है।
>
> II. (क) बाएं पैर के पार्श्व पहलू पर लगभग 1/6 व्यास का विदीर्ण घाव लगभग 1/6 व्यास का घाव लगभग 6" बाएँ घुटने से दूर।यह प्रवेश का घाव था क्योंकि घाव का मार्जिन उलटा था।
>
> (ख)बाहर निकला घाव बाएं पैर के पार्श्व पहलू पर और घाव के समान स्तर पर लगभग ¼" व्यास का कटा घाव। घाव का मार्जिन उल्टा था।
>
> (III) छह घंटे के भीतर चोटों की समय सभी चोटें आग्नेयास्त्रों के कारण होती हैं और स्वाभाविक होती है।"

अपनी जिरह में, उसने कहा कि अपनी निजी क्षमता में, उसने घायल सूचक का इलाज किया और यह भी कहा कि उसने पुलिस को इस बारे में सूचित किया था। उन्होंने आगे कहा कि जब कोई 5 फीट से अधिक दूरी पर गोली चलाता है तो वह घाव के प्रवेश और निकास की स्थिति के बारे में नहीं कह सकते। उन्होंने आगे कहा कि वह उसे कोई भी भोथरी वस्तु नहीं मिली और पैर और हाथ शरीर का महत्वपूर्ण हिस्सा नहीं हैं।

(ज) मामले के जांच अधिकारी अभियोजन गवाह संख्या-9 राम अनूप महतो ने कहा है कि 10.10.1999 को वह लखीसराय पुलिस थाने में तैनात था और उसी दिन उसे इस मामले की जांच का जिम्मा सौंपा गया था। जांच के दौरान उसने सूचक का बयान लिया और ग्राम सोढी में स्थित घटना स्थल का दौरा किया। उन्होंने यह भी कहा कि कथित भूमि पर दोनों पक्षों के बीच विवाद चल रहा था और उन्होंने अन्य गवाहों के बयान भी लिए.अपनी जिरह में उसने कहा कि उसने आरोपी का बयान नहीं लिया है।

15. बचाव पक्ष की ओर से दो गवाहों से जिरह की गई है। बचाव पक्ष के गवाह-1 शिवेंदु रंजन है, जिसकी जांच की गई है और उसने कहा है कि आरोपी मनोज सिंह जूनियर इंजीनियर के रूप में इस्लामपुर ब्लॉक में तैनात था और वह प्रासंगिक तारीख पर घटना के स्थान पर मौजूद नहीं था.बचाव पक्ष के गवाह-2 मनीष कुमार हैं, जिन्होंने बीडीओ,इस्लामपुर से एस. आई. लखीसराय (प्रदर्श ए), जो उपस्थिति रजिस्टर की जांच के आधार पर जारी किया गया था।

16. गवाहों के बयान का केवल अवलोकन यह साबित करता है कि दो अपीलकर्ता, अनुज सिंह और मनोज सिंह घटना स्थल पर एक बंदूक के साथ मौजूद थे और सूचना देने वाले अभियोजन गवाह-6 को आवेदक के कारण चोट लगी है। अपीलार्थी मनोज सिंह द्वारा इस बहाने का बचाव कि वह इस्लामपुर ब्लॉक में तैनात था, विश्वास को प्रेरित नहीं करता है क्योंकि कार्यालय द्वारा कोई उपस्थिति रजिस्टर नहीं रखा गया है और अभियोजन पक्ष के गवाह ने स्पष्ट रूप से कहा है कि अपीलार्थी, मनोज सिंह घटना के स्थान पर उपस्थित था।

17. यह विवादित नहीं है कि घटना के समय या हाथ या पैर पर लगी चोटों के संबंध में मामूली विरोधाभास हैं, लेकिन गवाहों का लगातार वर्णन यह है कि अपीलकर्ता बंदूकों से लैस घटना के स्थान पर मौजूद थे और उन्होंने सूचक अभियोजन गवाह-6 को चोट पहुंचाई। तथापि, दांडिक विचारण में किसी साक्षी की गवाही को केवल मामूली विरोधाभासों या चूक के कारण नहीं

छोड़ा जा सकता है, जैसा कि इस न्यायालय द्वारा निम्नलिखित में मत व्यक्त किया गया हैः नारायण चेतनराम चौधरी और अन्य बनाम महाराष्ट्र राज्य[1]। यह न्यायालय साक्ष्य में अंतर्विरोधों के मुद्दे पर विचार करते हुए, आपराधिक मुकदमे में साक्ष्य का मूल्यांकन करते हुए, यह अभिनिर्धारित किया कि केवल तात्विक विवरणों में अंतर्विरोधों को, न कि मामूली अंतर्विरोधों को, गवाहों की गवाही को अविश्वसनीय बनाने का आधार बनाया जा सकता है। फैसले के पैरा 42 का प्रासंगिक हिस्सा इस प्रकार हैः

> "42. केवल ऐसे भूलों का उपयोग साक्षी के परिसाक्ष्य को अविश्वसनीय बनाने के लिए किया जा सकता है जो तात्विक विवरणों में विरोधाभास के बराबर है। पुलिस के बयान में चूक ही आवश्यक रूप से साक्षी की गवाही को अविश्वसनीय नहीं बनाएगी।जब अदालत में गवाह द्वारा दिया गया विवरण प्रकट किए गए विवरण से अलग हो अपने पहले के बयानों में, अभियोजन का मामला संदिग्ध हो जाता है और अन्यथा नहीं।सत्य गवाहों के बयानों में छोटे-मोटे विरोधाभास दिखाई देते हैं क्योंकि कभी-कभी स्मृति झूठी हो जाती है और प्रत्येक व्यक्ति में अवलोकन की भावना अलग-अलग होती है।पहले के बयान में की गई चूकें यदि मामूली विवरण की पाई जाती हैं, जैसा कि वर्तमान मामले में है, तो इससे अभियोजन गवाह 2 की गवाही में कोई नुकसान नहीं होगा. यदि किसी महत्वपूर्ण मुद्दे पर किसी साक्षी के कथन का विरोधाभास है तो भी ऐसे साक्षी की पूरी गवाही को अस्वीकार करने का कोई आधार नहीं है।"

18. अभियोजन के मामले की पुष्टि करने के लिए एक चिकित्सा साक्षी का साक्ष्य बहुत महत्वपूर्ण है और यह केवल प्रत्यक्षदर्शियों की गवाही की जांच नहीं है, बल्कि यह एक स्वतंत्रता गवाही भी है, क्योंकि इससे अन्य मौखिक साक्ष्य से बिल्कुल अलग कुछ तथ्य स्थापित हो सकते हैं। इस न्यायालय द्वारा यह दोहराया गया है कि अभियोजन द्वारा पेश किए गए चिकित्सा साक्ष्य का बहुत समर्थन मूल्य है क्योंकि यह साबित करता है कि चोट कथित तरीके से हो सकती थी. अभियोजन गवाह-8 के मामले में सूचना देने वाले अभियोजन गवाह-6 की जांच करने वाले डॉ. हिमकर ने स्पष्ट रूप से कहा है कि सचूक को लगी सभी चोटें आग्नेयास्त्रों के कारण लगी हैं और यदि कोई व्यक्ति 6-7 फीट से गोली चलाता है तो घाव (घायल क्षेत्र) पर दाग नहीं बन सकता है।

---

1 (2000) 8 एससीसी 457

19. अभियोजन साक्षी का एक विस्तृत परीक्षक स्पष्ट स्थापित करता हैः

(क) कि मुखबिर अभियोजन गवाह-8 और दो अपीलकर्ताओं अनुज सिंह और मनोज सिंह के बीच सूचना देने वाले अभियोजन गवाह-8 को अपनी दीवार की मरम्मत करने से रोकने के संबंध में विवाद था।

(ख) सभी गवाहों ने 10.10.1999 को घटना के स्थान पर दो अपीलकर्ताओं की उपस्थिति की स्पष्ट रूप से पुष्टि की।

(ग) सभी प्रत्यक्षदर्शियों ने पुष्टि की है कि दो अपीलकर्ता अनुज सिंह और मनोज सिंह बंदूक से लैस थे।

(घ)अभियोजन गवाह-8, डॉ. हिमकर के चिकित्सा साक्ष्य की पुष्टि करते हैं कि सूचक अभियोजन गवाह-8 को लगी चोटों में गोलियां लगी थीं।

(ड) सूचना देने वाले अभियोजन गवाह-8 के शरीर के गैर-महत्वपूर्ण हिस्से पर चोट लगी थी।

20. यह सर्वविदित तथ्य है कि आघात का अर्थ केवल ऐसा कार्य करना है जिससे किसी व्यक्ति को शारीरिक पीड़ा, चोट या कोई रोग हो।कभी-कभी स्वेच्छा से चोट पहुंचाई जा सकती है या खतरनाक हथियारों या साधनों के इस्तेमाल से लगी हो सकती है।कोई व्यक्ति भारतीय दंड संहिता की धारा 324 के तहत खतरनाक हथियारों और साधनों के माध्यम से स्वेच्छा से चोट पहुंचाने के लिए उत्तरदायी होगा, जो इस प्रकार हैः-

> “324. खतरनाक हथियारों या साधनों द्वारा स्वेच्छया घाव कारित करना। धारा 334 में दिए गए मामले को छोड़कर जो कोई स्वेच्छा से गोली चलाने, चाकू मारने या काटने के लिए किसी उपकरण या अपराध के हथियार के रूप में उपयोग किए जाने वाले किसी भी उपकरण के माध्यम से चोट पहुंचाता है, या आग या किसी गर्म पदार्थ के माध्यम से, या किसी भी जहर या किसी भी संक्षारक पदार्थ के माध्यम से, या किसी भी विस्फोटक पदार्थ के माध्यम से, जो मानव शरीर के लिए सांस लेने, निगलने या रक्त में ग्रहण करने के लिए हानिकारक है, या किसी भी पशु के माध्यम से, स्वेच्छा से चोट पहुंचाता है,

वह तीन साल तक की अवधि के कारावास से, या जुर्माने से, या दोनों से दंडित किया जाएगा।"

21. भा. दं. सं. की धारा 324 के अधीन अपराध स्थापित करने के लिए निम्नलिखित घटकों की उपस्थिति आवश्यक है जो निम्नानुसार हैः-

1. अभियुक्त द्वारा किसी अन्य व्यक्ति को स्वैच्छिक चोट पहुंचाना, और

2. इस तरह का घाव हुआ थाः

क. गोली चलाने, काटने या चाकू मारने के लिए उपयोग किए जाने वाले किसी उपकरण या मृत्यु कारित करने वाले किसी अन्य उपकरण द्वारा, या

ख. आग या अन्य गर्म उपकरणों से, या

ग. जहर या अन्य संक्षारक पदार्थ द्वारा, या

घ. किसी विस्फोटक पदार्थ द्वारा, या

ड. एक ऐसे पदार्थ के द्वारा जो मानव शरीर के लिए निगलने, सांस लेने या रक्त के माध्यम से प्राप्त करने के लिए खतरनाक है, या

च. एक जानवर द्वारा

जब कोई व्यक्ति भारतीय दंड संहिता की धारा 324 के तहत खतरनाक हथियारों और साधनों द्वारा स्वेच्छा से चोट पहुंचाने का अपराध करता है, तो ऐसे व्यक्ति को तीन साल की अवधि के कारावास या जुर्माने से दंडित किया जाएगा।

22. वर्तमान मामले में, अभियोजन पक्ष के गवाहों के साक्ष्य से यह स्पष्ट है कि दो अपीलार्थियों ने एक विवाद के कारण जो अपीलार्थियों और सूचक अभियोजन गवाह-8 के बीच हुआ था, बंदूक का उपयोग करके सूचक, अभियोजन गवाह-8 के शरीर को चोट पहुंचाई है।यह अभियोजन पक्ष के गवाह के साक्ष्य से भी पुष्टि की गई है कि भूमि विवाद के कारण दोनों पक्षों के बीच पूर्व शत्रुता थी और इसे उनके कार्यों से समझा जा सकता है.इस प्रकार, दो अपीलार्थियों के खिलाफ भारतीय दंड संहिता की धारा ३२४ का आरोप सिद्ध हो गया है.एक बार जब भारतीय दंड संहिता की धारा ३२४ के तहत अपीलार्थियों के खिलाफ बंदूक से चोट पहुंचाने का आरोप

सिद्ध हो जाता है, जो एक खतरनाक हथियार है, तो वे शस्त्र अधिनियम की धारा २७ द्वारा निर्धारित हथियारों का उपयोग करने के लिए सजा से बच नहीं सकते हैं।

23. उपरोक्त तथ्यों और परिस्थितियों के विश्लेषण से, उच्च न्यायालय ने भारतीय दंड संहिता की धारा 324 और शस्त्र अधिनियम की धारा 27 के तहत दंडनीय अपराधों के लिए अपीलार्थियों को उचित रूप से दोषी ठहराया है। अपीलों में योग्यता की कमी है और तदनुसार उन्हें खारिज कर दिया जाता है।

(एन. वी. रमन), भारत के सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश

(कृष्ण मुरारी), न्यायमूर्ति

(हिमा कोहली), न्यायमूर्ति

नई दिल्ली

22 अप्रैल, 2022

खण्डन (डिस्क्लेमर) :– स्थानीय भाषा में निर्णय के अनुवाद का आशय, पक्षकारों को इसे अपनी भाषा में समझने के उपयोग तक ही सीमित है और अन्य प्रयोजनार्थ इसका उपयोग नहीं किया जा सकता। समस्त व्यवहारिक, कार्यालयी, न्यायिक एवं सरकारी प्रयोजनार्थ, निर्णय का अंग्रेजी संस्करण ही प्रमाणिक होगा साथ ही निष्पादन तथा कार्यान्वयन के प्रयोजनार्थ अनुमान्य होगा।